





ल. ३

त्वस्ति श्रीशायनमः शारदायनमः श्रीगुरुभ्योनमः अथलक्ष्मिमित  
धर्मसंवादे लिखिते यतो सत्ये ततो लक्ष्मी यतो लक्ष्मि ततो हरि  
यतो हरि ततो धर्म यतो धर्म ततो जय यस्य भक्त्या कोट्य सत्यभया  
वाटलक्ष्मि वस्तिन् जां हों लक्ष्मि वा सवस्तिन् तां हों रुक्म वस्तिन्  
जां हों रुक्म वस्तिन् तां हों धर्म वा सवस्तिन् जां हों धर्म तां हों जय हुन्  
द्व धर्म उवाचः धर्म ले लक्ष्मि थै आ गप गर्द भया हे लक्ष्मि ति प्रो सं वं म  
नुष्य शो वा पुजा गर्दन् सब थै वा शक्या न गर्दि उन कति मनुष्य धना द्य  
वन् कति मनुष्य कंगाल हुन् कवन कारन हो ति मि भोर परे उकी एति

राम.



लक्ष्मिर्धर्मलेविंतिगत्या लक्ष्मिउवाच लक्ष्मिदेव्याग्यागर्दिभइन्  
हर्धनिमिथेमविंतिगरिवुमाउकुसचुहवस् मकनवासदिव्यानदि  
न्याःअतिजनकाहातद्ध क्याहाभम्यादेषित्तिजनकोअलक्षिनम  
कहन्नुसुचुहवस्जोस्त्रिसुचिदुदेननूजोस्त्रिचंचलदेननूजोस्त्रि  
अतिआहारिद्धनूजोस्त्रिअतिकामनयाजोअस्त्रिअतिआलस्य  
येतिस्त्रिजनकाअलक्षिनहुन्यतिथोकअलक्षिनहुन्याकाधरमव  
सुदिनथुकसिगानभितामालिपिराषन्याचरनवठान्याकसिगरकुना  
कानिमा राषन्यापोषियाकोठेलियाकोसहारागन्याजुठोचोषोप



ल. शं

२

निनहेरुत्पासिलकोभावनभयाकिआगमामयेलहुन्मा वस्तुकाविलहुग  
रिगवन्पाह्वाकेसफिज्जारिगवन्पावानुपिनुपनिशोवादनजानिधान्या  
परियारस्यामिलाईनघुवाईआपुलुकिषान्या काद्यरमांहांभूतवस्त्  
येतिजनालेरातदिनकमायापनिअन्नपानीवहुतेआयापनिआयाको  
मात्रेदेपिअजलेगरिततायाकोहांडिमायानिहराईजान्द तलेगरिअ  
नपानिहराईजान्दभुतलेवाईजान्दइतिलक्षिमिधर्मसंवादेप्रथमोधा  
यः १ लक्षिमउवाच लक्षिमधर्मधेआग्यागदिभईनृषीजनका.लक्षि  
नमकहन्हुसुभुहवस् जोतिमसिनुवचनगन्या.जोतिविदिमावनइन

राम.

२



तव सहस्रं श्रृंग कन भोजन दिय जस्तो पूरा होला ॥ सहस्र गोदान दिया जस्तो पूरा होला ॥  
थोक जानि पुंमगनु परम यदया चला यंडित होला ॥ इति श्री धर्मलक्ष्मी संवादे पंचमोऽध्यायः ॥  
धर्म उवाच ॥ हे लक्ष्मि पूर्व जन्म मा गमा का पाप यहि लोक मा देखा पाय ॥ लोह चो मा का पा  
पले गो न्को जन्म हुंछ कौ सो चो मा का पापले बहि रे हुंछ ॥ भूमि चो मा का पापले जल से न्य  
रे मा हुंछ पाथी चो मा का पापले लाठे जन्म हुंछ ॥ कपास चो मा का पापले कोहि को जन्म हुंछ  
देव गुरु बाल राकन पुगन कन ॥ अतिला इनि दाग मा का पापले गुन गुन भया पनि माग  
रागि बाधि भई परि रहनु पला ॥ मनुष्य का पापले हली दिभई जंमला ॥ विरग को कन सुनी



गया का पाप ले संतान मासियला ॥ अगं म्या गं म्या माको आं फे घटि घटी कंगल होला ॥ वि  
राना धन जिय को चुलि गया का पाप ले अ पुत्र भई संतान मासि जा लाय स्ता पाप न गरी पुंन्य  
गनु ॥ यस नम माहा सख सै पति होला ॥ यलो ग मा हा पति सो ग लो ग वा स होला ॥ इति श्री  
धर्म लक्ष्मी सेवारेख हो मो ध्याये ॥ या दृष्टं पौष्टं दृष्टा ता दृष्टं पौष्टं मया ॥ यदि सुदो म सु  
दो वाम म दो सो न दिये ते ॥ श्री सम्भत् १८८५ साल मिति कार्तिक श्रृदि ६ रेज ५ ने फल पूर्व  
दि भाग का का होलियामे सोवर्ग को सिकाटे ॥ लिखित मुरम चन्दु य कहस्त शुभम् ॥ पठ  
नार्थ रावा प्रामका श्री कान्त उपाध्या शुभम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



- ②

आर्य समाज  
ARYA ARCHIVES

2976